SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बिनोद बिहारी महतो एवं झारखण्ड अलग राज्य निर्माण आन्दोलन

मोनिका बक्शी, शोधार्थी, इतिहास विभाग
अशोक कुमार मंडल, पीएच–डी, सेवानिवृत्त इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
मोनिका बक्शी, शोधार्थी
अशोक कुमार मंडल, पीएच–डी
E-mail : monikabakshi86@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/05/2026
Revised on : 19/07/2026
Accepted on : 28/07/2026
Overall Similarity : 00% on 20/07/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Jul 20, 2026 (02:40 PM)
Matches: 0 / 2636 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

झारखंड राज्य निर्माण का इतिहास बहुत पुराना है जो काफी कठिनाइयों से भरा रहा। इसमें कई सारे आंदोलनकारी उभर कर सामने आए, इन्होंने ही झारखंड की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना को अलग रूप दिया। झारखंड पूरे देश का 40 प्रतिशत खनिज अपने गर्भ में समाये हुए हैं जो पूंजीपतियों, उद्योगपतियों को सदियों से आकर्षित करता रहा है। इस क्षेत्र में अपना पूर्ण आधिपत्य स्थापित करने हेतु यहां की जनजातीय समुदाय को बहला–फुसलाकर उनकी जमीन छीन ली गई, उन्हें विस्थापित कर दिया गया एवं उनकी जमीनों का उचित मुआवजा भी उन्हें नहीं दिया गया। शोषण एवं लूट की नीति अपना कर यहां के मूल निवासियों को बहुत प्रताड़ित किया गया। उन्हें सामाजिक रूप से हमेशा नीचा दिखाया गया, राजनीतिक रूप से पीछे खींचा गया एवं आर्थिक स्थिति को तहस–नहस कर दिया गया ताकि वह अपनी सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति में ही उलझ कर रह जाए एवं पलट कर अपनी आवाज न उठा सके और इन सभी समस्याओं के बोझ तले कुचले जाएं। जब शोषणकारियों का शोषण अपनी अंतिम सीमा लांघ दिया गया तब यहां के मूल निवासियों द्वारा विद्रोह किया जाने लगा। झारखंड अलग राज्य निर्माण आंदोलन की चिंगारी लगी और उसने आग का रूप धारण करना प्रारंभ किया। इसमें कई सारे आंदोलनकारी उभर कर सामने आए जिसमें बिनोद बिहारी महतो अपनी एक अलग पहचान रखते हैं। झारखंड अलग राज्य निर्माण आंदोलन में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द

झारखंड, आंदोलन, सांस्कृतिक शोषण, प्राकृतिक संपदा, राजनीति.

झारखंड को एक अलग राज्य की पहचान दिलाने के पीछे कई सारे तथ्य विद्यमान थे जिसे जानने के लिए हमें यहां की भौगोलिक पृष्ठभूमि को जानना होगा। खनिज संपदा की बात करें तो झारखंड पूरे भारत का 40 प्रतिशत हिस्सा खनिज

अपने अंदर समाये हुए हैं जिन्हें पाने की होड़ में बड़े–बड़े पूंजीपति, महाजनों ने जनजातीय समुदाय का शोषण किया जिससे निदान पाने हेतु कई सारे आंदोलनकारी उभर कर सामने आए जिनमें बिनोद बिहारी महतो का महत्वपूर्ण छवि है।

बिनोद बिहारी महतो का जीवन परिचय

इनका जन्म 23 सितंबर 1923 ई० में धनबाद जिले के बलियापुर अंचल में बड़ादाहा गांव में हुआ था।[1] उनके पिता महेंद्र महतो एवं माता मंदाकिनी महतो थीं। इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा डी.ए.वी. झरिया से, पी.के. राय कॉलेज से इंटर, रांची कॉलेज से स्नातक की डिग्री एवं पटना लॉ कॉलेज से वकालत की डिग्री ली। 1952 ई. में स्नातक की डिग्री के दौरान ही रांची से उनके राजनीतिक जीवन की शुरुआत हुई। इसी वक्त निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में झरिया विधानसभा से चुनाव में खड़े हुए जहाँ उनके विपक्षी राजा काली प्रसाद सिंह थे। इस क्षेत्र में पहला चुनाव था जहां कुर्मी व्यक्ति राजा के विपक्षी दल के रूप में चुनाव में खड़ा हुआ हो।[2] इधर राजा काली प्रसाद सिंह को संदेह हुआ कि यदि बिनोद बिहारी महतो चुनाव जीत गए तो वह उपहास का पात्र बन जाएँगे, इसलिए उन्होंने तुरंत अपने पुरोहित को बिनोद बिहारी महतो के पास भेजा ताकि उसे चुनाव लड़ने से रोके। उन्हें यह समझाएं कि अगली बार चुनाव में खड़े होना, मैं तुम्हारा समर्थन करूंगा। बिनोद बिहारी महतो ने उनकी बात नहीं मानी यह जानते हुए भी कि उन्हीं के सहयोग से उनकी शिक्षा चल रही है, किंतु दोनों ही हार गए।

चुनाव के पश्चात् वे पुनः अपनी पढ़ाई में जुट गए। 1956 ई. में वे धनबाद में वकालत करने हेतु आए। नीची जाति अर्थात् कुर्मी जाति का होने के कारण कोई भी सीनियर वकील उन्हें अपने निर्देश में लेना नहीं चाह रहा था। इसी दौरान उनकी मुलाकात अविनाश कुमार सिन्हा से हुई। इस प्रकार वे धनबाद क्षेत्र कोर्ट में अपना योगदान देना प्रारंभ किये। उस समय जनजातीय समाज का आति शोषण किया जा रहा था, डरा–धमका कर उनकी जमीने हड़पी जा रही थी। यहां की जनजातीय समुदाय, किसान वर्ग, निम्न जाति के लोग महाजनों, सूबेदारों के चंगुल में फंस जा रहे थे। उनके हक की लड़ाई के लिए कोई नहीं था। समाज में व्याप्त इन सभी कुरीतियों के विरुद्ध 1967 ई. में बिनोद बाबू ने एक सामाजिक संगठन बनाया 'शिवाजी समाज'।[3] इसके तहत वे मूल जनजातियों के लिए कोर्ट में लड़ते थे। उन्हें न्याय मिलने पर ही वह थोड़ी फीस लिया करते थे। समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने हेतु उन्होंने सामाजिक बदलाव लाने का निश्चय किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि केवल वकालत के माध्यम से यहां के मूल निवासियों को न्याय दिलवाना संभव नहीं है। समाज में व्याप्त अव्यवस्था की जड़ों को व्यवस्थित करना आवश्यक है।

बिनोद बिहारी महतो का राजनीतिक जीवन

बिनोद बाबू मार्क्स एवं लेनिन के सिद्धांत से काफी प्रभावित थे। 1962 में वे लाल झंडे की ओर बढ़े एवं कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए। धीरे–धीरे उन्होंने ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, प्रखंड समिति एवं रात्रि पाठशाला में लोगों को पढ़ाने के लिए भी प्रोत्साहित करते थे। 1964 में कम्युनिस्ट पार्टी विखंडित हो गया तो बिनोद बाबू एवं उनके मित्रों ने मिलकर सीपीएम ;ब्ब्डद्ध का गठन किया जिनके प्रमुख एस के बक्शी, ज्योतिर्मय राम थे।

1960 ई. में 'इंडियन नेशन' नामक अखबार में यह खबर छापी गई की धनबाद के बलियापुर प्रखंड के कई गांवों में रात्रि पाठशालाएं चलाई जा रही है जिसमें कम्युनिस्ट नक्सलियों द्वारा बड़ा षड्यंत्र रचा जा रहा है, जो आने वाले समय के लिए बहुत घातक हो सकता है इसलिए समय रहते इसे रोकना अनिवार्य है।[4] बिनोद बाबू ने इस खबर को अपने सभी मित्रों तक पहुंचाया एवं इस खबर से आहत होकर 1966 को बिहार बंद का आवाह्न किया। इसमें ए. के. राय को गिरफ्तार कर लिया गया। विनोद बाबू और ए. के. राय एक दूसरे के कामों से अच्छे से परिचित थे। बिनोद बाबू ए. के. राय से मिले एवं उन्हें जेल से रिहा करवाया। ए. के. राय जेल से रिहा होते ही अपने पद से इस्तीफा दे दिया जो की सिंदरी में इंजीनियर थे। अतः पुनः वे सभी पार्टी के कार्यों में लग गए।[5] चुनाव हुआ ए. के राय सिंदरी के विधायक बने। इसी समय बिनोद बाबू बलियापुर प्रखंड के प्रमुख बने। यहां की सामाजिक स्थिति दिन–प्रतिदिन दयनीय होती जा रही थी। महाजन, सामंत, सूदखोरों ने ग्रामीणों को अपने शोषण के जंजीरों में जकड़ रखा था। इस स्थिति को बिनोद बाबू अच्छे से जान चुके थे एवं उन्होंने अपने पद का त्याग कर मजदूर संगठन का निर्माण किया एवं शिवाजी संगठन से भी जुड़े रहे एवं मजदूरों के बीच व्याप्त समस्याओं का निदान किया। अतः लोगों के बीच उनकी लोकप्रियता और बढ़ गई। इन्होंने कांग्रेस को शोषक पार्टी भी कहा जिससे तत्कालीन सरकार उनसे नाराज भी हुई।[6]

1971 ई. में चुनाव के दौरान बिनोद बाबू ने चुनाव में शिबू सोरेन का साथ दिया। शिबू सोरेन संथाल समाज की स्थापना कर रहे थे एवं बिनोद बाबू शिवाजी समाज की। दोनों एक दूसरे से सहयोग की अपेक्षा रखते थे। दोनों ने शोषक समाज के

खिलाफ एकजुट होकर आंदोलन की तैयारी की थी। इसी दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री ने बिनोद बाबू से मिलने की इच्छा व्यक्त की, क्योंकि इंदिरा गांधी की पार्टी जमींदारों एवं घूसखोरों का बचाव करती थी इसलिए बिनोद बाबू ने मिलने से इनकार कर दिया।[7]

बिनोद बिहारी महतो ने ए.के राय के साथ मिलकर एक नई पार्टी का गठन किया जिसका नाम "जनवादी संग्राम समिति" रखा।[8] बिनोद बाबू ने अपने कार्यकर्ताओं को यह जानकारी दी कि अब वह लाल झंडे से चुनाव नहीं लड़ रहे हैं। शिबू सोरेन के साथ मिलकर बिनोद बाबू महाजनी प्रथा के विरूद्ध आन्दोलन में सहयोग कर रहे थे जो अपनी चरम सीमा पर था। इधर समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध जन आंदोलन झारखंड के कई जिलों में अति तीव्र गति से चल रहा था साथ ही झारखंड के संस्कृति को संजोए रखने का भरसक प्रयास किया जा रहा था। इसमें बिनोद बाबू के साथ कई लोग और भी सम्मिलित थे जिनमें प्रमुख थे टेकलाल महतो, चूड़ामन महतो, नंदलाल महतो, मोतीलाल महतो, गोविंद महतो इत्यादि।[9] दो पत्ते लगी सखुआ की एक छड़ी से एक ग्राम समिति दूसरे ग्राम समिति को सूचना प्रसारित करती थी। यह गुप्त सूचनाओं के आदान–प्रदान का एक चिन्ह था। इसी प्रकार लोग बैठक में डुगडुगी बजाते थे जिसका अर्थ था हथियारों के साथ लैस होकर बैठक में इकट्ठा हो जाना।[10] इसकी अंतिम परिणति 4 फरवरी 1972 ई. में बिनोद बिहारी महतो, शिबू सोरेन एवं ए के राय ने मिलकर "झारखंड मुक्ति मोर्चा" का गठन किया।[11] धनो सोरेन संथाल समाज के इन क्रांतिकारियों ने यह अच्छे से भांप लिया था कि जब तक गरीबों के हाथ में सत्ता नहीं आएगी तब तक उनका विकास सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से नहीं हो पाएगा इसलिए झामुमो के कार्यकर्ताओं ने ''अबुआ दिशुम, अबुआ राज'' स्थापित करने का निश्चय लिया। झारखंड मुक्ति मोर्चा पार्टी ने कई सारे निर्णय लिए अपनी बैठक के दौरान जो निम्न थेः

- झामुमो शोषण मुक्त झारखंड एवं अलग राज्य पाने के लिए तब तक संघर्ष करेगा जब तक वह अपने लक्ष्य को का न पा ले।
- झारखंड राज्य के झंडे का रंग लाल होगा।
- झंडे में आदिवासी हथियार तीर–धनुष का चिन्ह होगा।
- झारखंड राज्य में मध्य प्रदेश के रायगढ़, सरगुजा तथा उड़ीसा के सुंदरगढ़ मयूरभंज, क्योंझर एवं संबलपुर सम्मिलित होंगे तथा बंगाल के पुरूलिया, बांकुड़ा एवं दिनाजपुर को मिलाकर बनाया जाए।
- जल, जंगल और जमीन को रक्षा करना इस संगठन का मुख्य उद्देश्य होगा।

इसी समय केन्द्र सरकार ने कोयला उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करने की बात की गई। इसी दौरान कोयला माफियायों ने लठैतों की कई सैन्य टुकड़ियाँ तैयार की। यहाँ के मूल निवासियों को विस्थापित किया जाने लगा। उनकी जमीनों पर उद्योग लगाकर उनकी जमीनें हड़प ली गई, उन्हें नौकरी नहीं दी गई। यहाँ के मूल निवासियों को पूरी तरह से दरकिनार कर दिया गया। इस समय यूनियन के नेता जेल में थी किन्तु ए. के. राय जेल से रिहा हो गए थे एवं उनके नेतृत्व में हजारों मजदूर तीर–धनुष लेकर कार्यालय पहुँचे। इसी समय बिनोद बाबू ने सभी मजदूरों से कहा आंदोलनों का वजह से सरकार कोयला खानों का राष्ट्रीयकरण कर रही है। हम सबों को मिलकर कोयला माफिया को भगाना होगा।[12] इस योजना के तहत मजदूरों एवं मूल निवासियों ने उन्हें भगाने का भरसक प्रयास किया, सामूहिक प्रहार किए, किन्तु भगा न सके क्योंकि सरकार माफियाओं का पूर्ण साथ दे रही थी जिनसे प्रशासन को कमाई होती थी। विस्थापित मजदूरों के इस समस्या की घडी में ए. के. राय एवं बिनोद मिहारी महतो का पूर्ण सहारा मिला।[13] शिबु सोरेन, एन. ई. होरो, बिनोद बिहारी महतो एवं इस आन्दोलन अग्रणी नेता सदानन्द झा ने मिल कर कई प्रस्ताव तय किए जो इस प्रकार हैः

- छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट एवं संथाल परगना टेनेंसी एक्ट की सुरक्षा।
- सूदखोरों, महाजनों द्वारा हड़पी गई जमीनों को यहाँ की मूल निवासियों को वापस करना।
- जंगल, जमीनों की रक्षा को सुनिश्चित करना।
- झारखण्ड के मूल निवासियों पर ही रहे सरकारी दमन के नीतियों पर अंकुश लगाना।
- यहाँ की धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक परंपराओं को सुरक्षित रखना आदि।

शिबू सोरेन ने सभी बातों को गाँव के हर क्षेत्र तक पहुँचाने का काम किया। एन. ई. होरो ने कहा झारखण्ड की अस्तित्व की लड़ाई है। बिनोद बिहारी महतो ने कहा सभी के साथ मिलकर ही आन्दोलन को सफलता मिल सकती है। इस पार्टी का नाम हमतो मांझी रखा गया। इसके अग्रणी नेता सदानन्द झा थे।[14] गिरिडीह के पीरटांड में स्थित ढोलकट्ठा नवम्बर 1972 ई.

में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा से पूर्व ही जमींदार एवं साहूकारों की खेतों से धार काट लिए गए। इस आन्दोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्ता शिबु सोरेन, प्रेम प्रकाश हेम्ब्रम, छटु टुडु, धानो सोरेन थे।[15] बिनोद बिहारी महतो ने 2 जून, 1973 ई. में गिरिडीह के डुमरी में स्थित तामागोडिया के महाजन मनोहर मिसिर के घर को अपने हजारों साथियों के साथ घेर उसे बंधक बना लिया। इधर धनबाद के तोपचांची, सिंहडीह में साहूकार कुंदन साव ने कईयों की जमीने हड़प रखी थी। इसी समय झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने कुंदन साव के जमीन पर धनकटी का एलान किया। इसी दौरान पुलिस भी वहाँ बचाव हेतु पहुँची, आदिवासियों ने पुलिस को पारसनाथ की पहाड़ियों की ओर ले गए जिन्हें कभी लौटाया नहीं गया और धान काट लिए गए।[16]

झारखण्ड समन्वय समिति

8 अगस्त 1987 ई. को झामुमो के केन्द्रीय अध्यक्ष (निर्मल महतो) थे। उनकी गोली मार कर हत्या कर दी गई जिससे झारखण्ड की जनता में आक्रोश की लहर फैल गई। उत्तरी छोटानागपुर सिंहभूम एवं राँची में आन्दोलन काफी तीव्र हो गया। विस्थापित मजदूर और किसान लाल–हरा मैत्री आन्दोलन चल रहा था। इसमें ए. के. राय एवं बिनोद बिहारी महतो भी सम्मिलित थे। झारखण्ड अलग राज्य निर्माण की मांग का दबाव अब सरकार पर बढ़ने लगा था। 15 नवम्बर 1987 ई. को बिरसा जयंती पर झारखण्ड समन्वय समिति द्वारा मोराबादी मैदान में महारैली का आयोजन किया गया। जहाँ झारखण्ड के दूर–दराज से लोग आए एवं कईयों को सरकार द्वारा रोकने का प्रयास किया गया, कई ट्रेनों एवं वाहनों को रोका गया फिर भी भारी मात्रा में लोग एकजुट हुए एवं अपनी एकता का प्रमाण दिया। इस भीड़ को देखते हुए रामविलास पासवान ने कहा "झारखण्ड आन्दोलन ऐसे स्तर पर पहुँच गया है, जिसे रोका या खत्म नहीं किया जा सकता।" इस आन्दोलन से त्रस्त हो कर सरकार 19 नवम्बर को झारखण्ड बंद किया गया एवं यहाँ कर्फ्यू लगा दिए गए।[17]

4 सितम्बर 1989 ई. को पहली बार दिल्ली की बैठक में झारखण्ड से सम्बंधित प्रश्न उठाए गए। इसमें यह निर्णय लिया गया कि समिति झारखण्ड का दौरा करेगी एवं वहाँ कि जनता का राय लेगी। 16 अक्टुबर, 1989 ई. को समिति ने अपनी रिपोर्ट गृहमंत्री को सौंपी। 20–21 सितम्बर को समिति की बैठक हुई जिसमें आम जनता के संगठनों के प्रतिनिधियों ने अलग राज्य की मांग रखी। लोकसभा एवं विधानसभा में घोषणा हुई। इसके तुरंत बाद सरकार बदली जिससे पूरी परिस्थिति ही परिवर्तित हो गई।[18]

1989 ई. में 9वीं लोकसभा चुनाव हुई जिसमें झारखण्ड क्षेत्र के 14 सीटों में तीन सीटों पर जनता दल, पाँच सीटों पर भारतीय जनता पार्टी, 3 सीटों पर झारखण्ड मुक्ति मोर्चा एवं दो सीटों पर कांग्रेस की जीत हुई। धनबाद से मार्क्सवादी समन्वय समिति ए के राय की जीत हुई। गिरिडीह के संसदीय क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में लड़ रहे बिनोद बिहारी महतो की एक से भी कम प्रतिशत वोटों से हार हो गई।[19] 1991 ई. में नये चुनाव हुए जिसमें झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने 14 सीटों में से छः सीटें जीती, बिनोद बाबू को गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र से सांसद चुना गया जहाँ इन्होंने झारखण्ड अलग राज्य की मांग जोरदार तरीके से की। इन्होंने "पढ़ो और लड़ो" का नारा दिया वे अच्छे से जानते थे। झारखण्ड के जनजातियों के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण लोगों में व्याप्त अशिक्षा है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध–पत्र से यह कहा जा सकता है कि बिनोद बिहारी महतो का जीवन झारखण्ड के मूल निवासियों के हक की लड़ाई के लिए समर्पित था। उन्होंने झारखण्ड की जल, जमीन, जंगल, खनिज को अपनी कलम और राजनीति के माध्यम से बचाया था। यहाँ के लोगों को न्याय दिलाने एवं उसकी सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक संपदाओं को भी बचाने का काम किया। संसद में झारखण्ड अलग राज्य निर्माण के मुद्दें उठाए, लोगों में शिक्षा का प्रसार किया। आज उनके सम्मान में बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय (BBMK) की स्थापना की गई है जो उनके शिक्षा के सपने को आगे बढ़ा रही है।

संदर्भ सूची

1. महतो, शैलेन्द्र (2015) *झारखण्ड की समरगाथा.* दानिश बुक्स, दिल्ली, पृ. 532।
2. महतो, राजकिशोर (2002) *झारखण्ड आन्दोलन के मसीहा बिनोद बिहारी महतो.* डायमण्ड पॉकेट बुक्स, राँची, पृ. 32।
3. दत्त, बलवीर (2014) *कहानी झारखण्ड आन्दोलन की इतिहास से साक्षात्कार.* क्राउन पब्लिकेशन, रांची, पृ. 592।
4. राय, अजित (2011) *फख्र होगा तुम्हे कि कि ए. के. राय को देखा था.* शहर पब्लिकेशन, धनबाद, पृ. 18।

5. उपरोक्त, पृ. 30–37।
6. उपरोक्त, पृ. 55।
7. सिन्हा, अनुज (2013) *झारखण्ड आन्दोलन का दस्तावेज शोषण संघर्ष और शहादत.* पेपर, नई दिल्ली, पृ. 69।
8. साक्षात्कार शिवाजी संगठन के सदस्य, चुडामन महतो, डुमरी (14.02.2025)।
9. महतो शैलेन्द्र (2015) *झारखण्ड की समरगाथा.* दानिश बुक्स, दिल्ली, पृ. 292।
10. साक्षात्कार सीताराम महतो, "शिवाजी समाज के सदस्य, जोशी चंदनकियारी, बोकारो (15.05.2025)।
11. ध्साक्षात्कार धनो सोरेन, संथाल समाज के सदस्य (टुण्डी), 17.02.2025।
12. पूर्वोक्त, महतो, शैलेन्द्र (2015) *झारखण्ड की समरगाथा.* दानिश बुक्स, दिल्ली, पृ. 305–305।
13. दत्त, बलबीर (2014) *कहानी झारखण्ड आन्दोलन की इतिहास से साक्षात्कार.* क्राउन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ. 185–186।
14. पूर्वोक्त, महतो, शैलेन्द्र, पृ. 296–299।
15. कुमार विजय (2012) *बिहार सृजन से शताब्दि वर्ष.* बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना, पृ. 236–237।
16. पूर्वोक्त, महतो, शैलेन्द्र, पृ. 300।
17. उपरोक्त, महतो, शैलेन्द्र, पृ. 505–510।
18. पूर्वोक्त, दत्त, बलबीर, पृ. 312–313।
19. उपरोक्त, दत्त, बलबीर, पृ. 316–317।

****